मन से निभाओ

मोती जैसे अक्षरों में
तेरा किरदार खिलेगा,
अगर किसी के दर्द में
दवा बनकर के रहेगा,
किसी दिल में बसकर
तेरा चेहरा ही खिलेगा,
शबनम में छुपा अक्स
आँखों में गलत रहेगा
पत्तों की सिलवटों में
कसमसाता ही रहेगा
जो कहते है हम तुम्हारे
वो बिछड़ते ही जायेंगे,
जीवन की इन राहों में
अकेला छोड़ कर जाएंगे,
ना करो इजहार प्रेम का
गर निभा ना सको तुम,
यह जीवन है अनमोल
इसे खुशनुमा रखो तुम,
फूल गुलदस्ते से खुलकर
बिखर बिखर ही जाएंगे,
उड़ा कर खुशबू अपनी
खुशियां बाँट कर जाएँगे;
जिनको कहते हो अपना
उन्हें दिल से भी मानना;
गर थाम लिया है हाथ
ना कभी उसको छोड़ना,
हो भी जाय गलती कभी
जुबान से गरीब ना होना.

✍ **गोपाल कृष्ण व्यास**